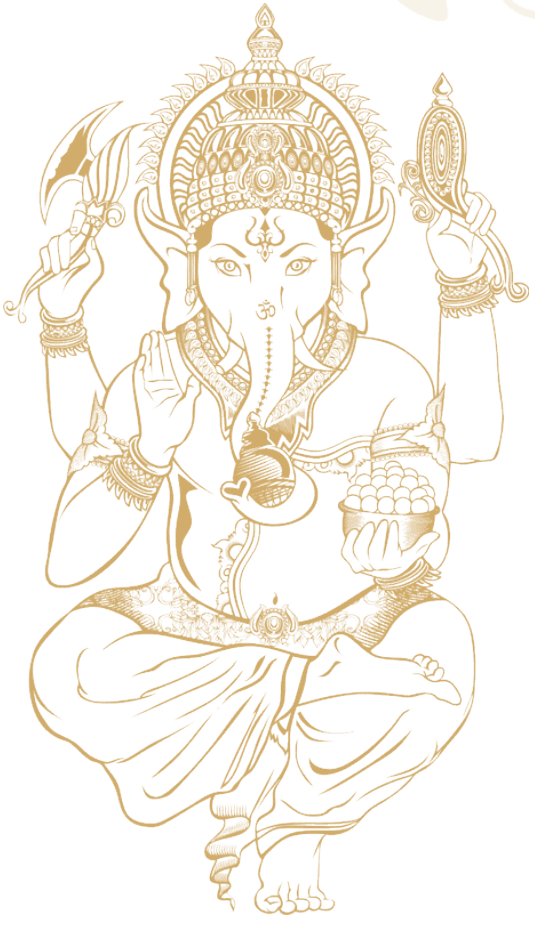

Kalpesh Bhumika

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121064001

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121064001 Date: 26/01/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
17/07/1997	जन्म तिथि	4-05/04/2002
गुरुवार	दिन	गुरु-शुक्रवार
घंटे 14:00:00	जन्म समय	04:30:00 घंटे
घटी 19:51:29	जन्म समय(घटी)	54:51:58 घटी
India	देश	India
Barmer	स्थान	Sojat River
25:43:00 उत्तर	अक्षांश	25:53:00 उत्तर
71:25:00 पूर्व	रेखांश	73:45:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:44:20	स्थानिक संस्कार	-00:35:00 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:03:24	सूर्योदय	06:23:47
19:37:29	सूर्यास्त	18:52:49
23:49:20	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:02

तुला	लग्न	कुम्भ
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	शनि
वृश्चिक	राशि	धनु
मंगल	राशि-स्वामी	गुरु
ज्येष्ठा	नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा
बुध	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
3	चरण	4
ब्रह्म	योग	शिव
बालव	करण	कौलव
यी-यीशू	जन्म नामाक्षर	ढा-ढपली
कर्क	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
विप्र	वर्ण	क्षत्रिय
कीटक	वश्य	मानव
मृग	योनि	वानर
राक्षस	गण	मनुष्य
आद्य	नाड़ी	मध्य
मृग	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 7वर्ष 10मा 13दि	15:29:24	तुला	लग्न	कुंभ	11:26:30	शुक्र 2वर्ष 10मा 29दि
शुक्र	00:58:47	कर्क	सूर्य	मीन	21:06:13	मंगल
31/05/2012	23:49:38	वृश्चि	चंद्र	धनु	24:43:28	04/03/2021
31/05/2032	19:56:48	कन्या	मंगल	वृष	00:06:04	04/03/2028
शुक्र 30/09/2015	22:11:17	कर्क	बुध	मीन	18:32:43	मंगल 31/07/2021
सूर्य 29/09/2016	26:00:37	मक व	गुरु	मिथु	13:35:07	राहु 18/08/2022
चन्द्र 31/05/2018	28:41:57	कर्क	शुक्र	मेष	10:39:04	गुरु 25/07/2023
मंगल 31/07/2019	26:20:10	मीन	शनि	वृष	16:53:27	शनि 02/09/2024
राहु 31/07/2022	27:34:33	सिंह व	राहु व	वृष	26:26:42	बुध 30/08/2025
गुरु 31/03/2025	27:34:33	कुंभ व	केतु व	वृश्चि	26:26:42	केतु 26/01/2026
शनि 31/05/2028	13:22:00	मक व	हर्ष	कुंभ	03:35:41	शुक्र 29/03/2027
बुध 31/03/2031	04:51:09	मक व	नेप	मक	16:41:45	सूर्य 03/08/2027
केतु 31/05/2032	09:12:04	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	23:40:49	चन्द्र 04/03/2028

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:20 चित्रपक्षीय अयनांश 23:53:02

लग्न-चलित

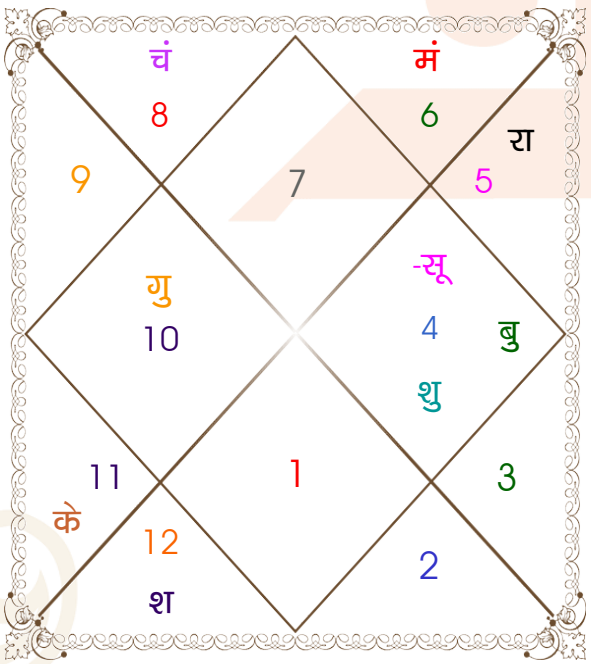

लग्न-चलित

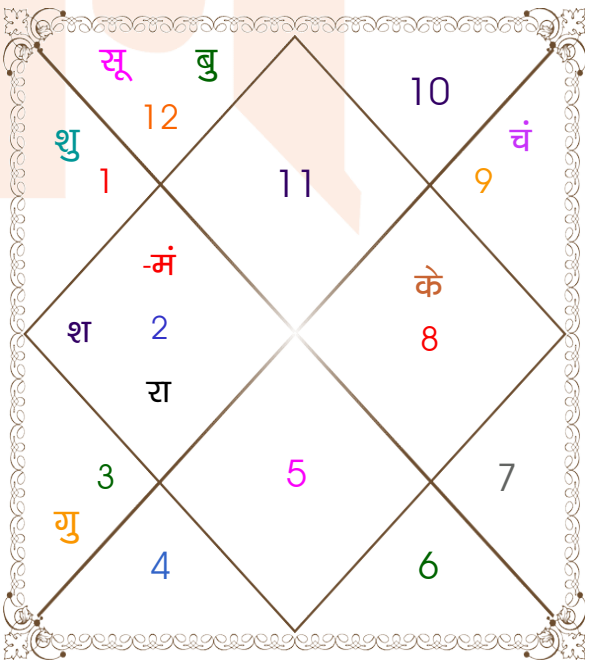

Gayatri jyotish karyalaya
Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	धनु	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.50		

कुल : **18.5 / 36**

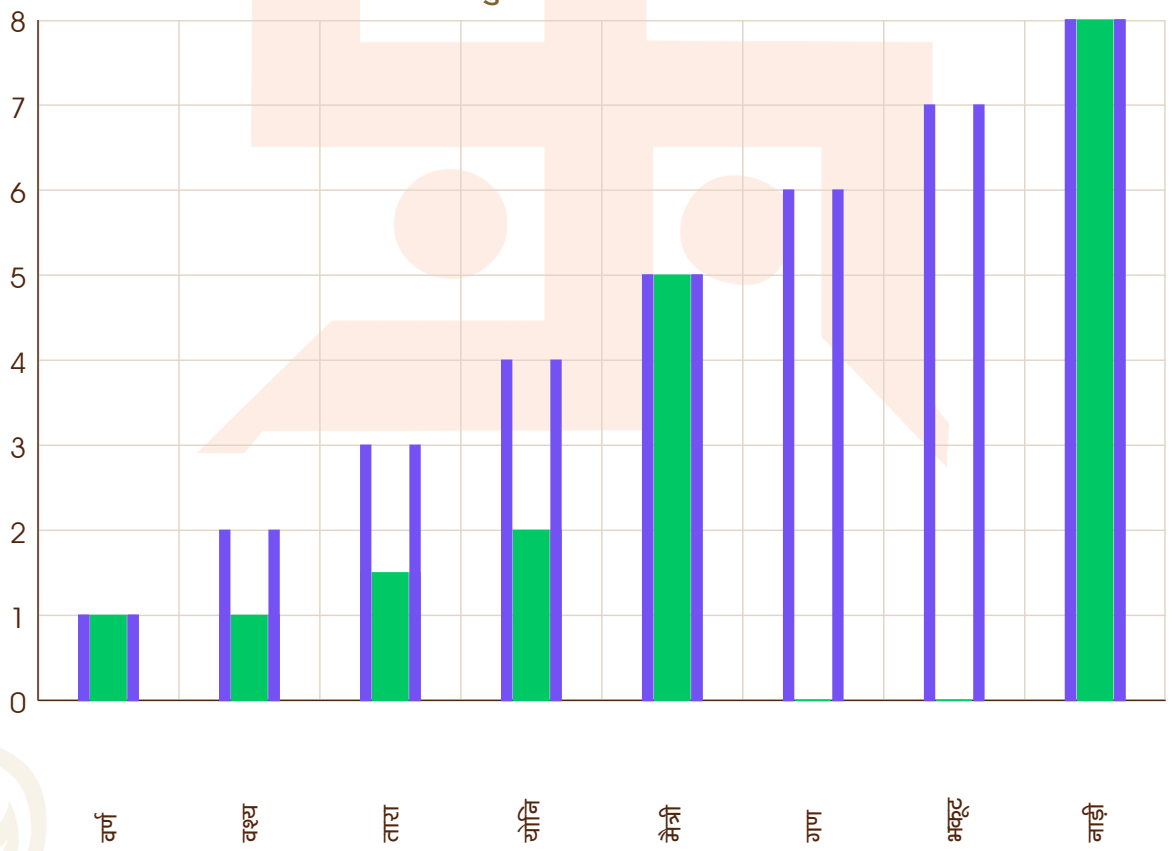

Gayatri jyotish karyalaya
Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

झंसचमी का वर्ग मृग है तथा ठीनउपां का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार झंसचमी और ठीनउपां का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

झंसचमी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल झंसचमी कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ठीनउपां मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु ठीनउपां कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु झंसचमी कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

झंसचमी तथा ठीनउपां में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

Gayatri jyotish karyalaya
Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

झंसचर्मी का वर्ण ब्राह्मण तथा ठीनउपां का वर्ण क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके प्रभाव से ठीनउपां में अपने पति के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी। कभी-कभी क्षत्रिय खून की गर्मी भी समय-समय पर उबाल मारने के कारण समय-समय पर ठीनउपां आक्रामक व्यवहार कर सकती हैं हालांकि उनका व्यवहार कभी भी अनियंत्रित नहीं होगा। ठीनउपां सदैव अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन भली-भांति करती रहेंगी तथा वे सदैव प्रशंसा की पात्र रहेंगी।

वश्य

झंसचर्मी का वश्य कीट है एवं ठीनउपां का वश्य चतुष्पद है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। चतुष्पद एवं कीट दो भिन्न प्राणी हैं। किंतु दोनों का प्रकृति में सह-अस्तित्व है। दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद अलग होते हुए भी दोनों एक-दूसरे के लिए घातक नहीं होंगे। इसी प्रकार, झंसचर्मी चतुष्पद अर्थात् पशु एवं ठीनउपां कीट वश्य की होने के कारण दोनों के स्वभाव, व्यवहार, गुण, पसंद/नापसंद में अंतर होते हुए भी दोनों के बीच वैवाहिक संबंध सामान्य ही रहने की प्रबल संभावना है। दोनों का स्वभाव गंभीर एवं संकोची रहेगा तथा दोनों सौहार्दता एवं प्रेम से अपना जीवन यापन करते रहेंगे।साथ ही अपने-अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

झंसचर्मी की तारा मित्र तथा ठीनउपां की तारा विपत है। ठीनउपां की तारा विपत होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। यह मिलान झंसचर्मी एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्य एवं नुकसान का कारण बन सकता है। परन्तु कड़े एवं लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सुखदायी हो सकता है। संभव है कि ठीनउपां का रुख सहयोगात्मक नहीं हो तथा आपसी विश्वास, प्रेम एवं समझ की कमी बनी रहे। अक्सर पति एवं पत्नी के बीच संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े रह सकते हैं तथा बच्चे भी इसका गलत फायदा उठायेंगे। जिसके कारण संभव है कि बच्चे योग्य एवं आज्ञाकारी नहीं हों।

योनि

झंसचर्मी की योनि मृग है तथा ठीनउपां की योनि वानर है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी

अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में झंसचमीं एवं ठीनउपां दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि झंसचमीं एवं ठीनउपां के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण झंसचमीं एवं ठीनउपां जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

झंसचमीं का गण राक्षस है तथा ठीनउपां का गण मनुष्य है। अर्थात ठीनउपां का गण झंसचमीं के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान रहेगा। ज्योतिषीय दृष्टि से यह संबंध अधिक दिनों तक नहीं रहने वाला होगा। दोनों के वैचारिक मतभेद परिवार के सदस्यों के जीवन को अशांत बना सकते हैं। ऐसा विवाह त्याज्य है।

भकूट

झंसचमीं से ठीनउपां की राशि द्वितीय भाव में स्थित है तथा ठीनउपां से झंसचमीं की राशि द्वादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके कारण झंसचमीं गुस्सैल एवं लड़ाकू स्वभाव के हो सकते हैं। साथ ही शारीरिक रूप से कमजोर तथा अपव्ययी होंगे। ठीनउपां समझौतावादी, सौम्य एवं दयालु प्रवृत्ति की होंगी तथा अपने कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को आसानी से बखूबी निभाती रहेंगी तथा बचत भी करती रहेगी। दूसरी ओर झंसचमीं शाहखर्च, लापरवाह एवं अय्याशी में पैसे बर्बाद करने वाले हो सकते हैं।

नाड़ी

झंसचमें की नाड़ी आद्य है तथा ठीनउपां की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का मिलान अति उत्तम माना जाता है क्योंकि इसमें जीवन के तीन आवश्यक घटकों में से दो वात एवं पित्त का समन्वय है। जीवन के अस्तित्व के लिए वात एवं पित्त का समन्वय आवश्यक है। जिसके कारण आपकी संतान काफी बुद्धिमान, स्वस्थ, मानसिक रूप से दृढ़ एवं सौभाग्यशाली होंगी। जो भौतिकवादी विश्व में सुविधा संपन्न जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

मेलापक फलित

स्वभाव

झंसचमीं की जन्म राशि जलतत्व युक्त वृश्चिक तथा ठीनउपां की अग्नितत्व युक्त धनु राशि है। जल एवं वायु की परस्पर नैसर्गिक विषमता के कारण झंसचमीं और ठीनउपां की परस्पर स्वभावगत असमानताएं रहेंगी। इसके प्रभाव से आपसी संबधों में मधुरता नहीं होगी जिससे वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं रहेगा।

झंसचमीं की राशि का स्वामी मंगल तथा ठीनउपां की राशि का स्वामी बृहस्पति परस्पर मित्र राशियों में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता होगी तथा झंसचमीं और ठीनउपां के मध्य मित्रता पूर्ण संबंध स्थापित होंगे फलतः एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही प्रेम सहानुभूति एवं सहयोग का भाव भी रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर होंगे। अतः दाम्पत्य संबंधों में प्रगाढ़ता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन में भी सुख शांति तथा समृद्धि बनी रहेगी।

झंसचमीं एवं ठीनउपां की जन्म राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके भाव से परस्पर संबंधों में विरोध तथा वैमनस्य का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देकर आलोचनात्मक दृष्टि कोण अपनाएंगे। इससे झंसचमीं और ठीनउपां के वैवाहिक जीवन में अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। अतः यदि झंसचमीं और ठीनउपां बुद्धिमता तथा सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो किंचित अशुभता में कमी आ सकती है।

झंसचमीं का वश्य कीट एवं ठीनउपां का वश्य चतुष्पद है। कीट एवं वश्य में समानता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं समान होंगी। अतः दाम्पत्य संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होंगे।

झंसचमीं का वर्ण ब्राह्मण तथा ठीनउपां का वर्ण क्षत्रिय है। अतः झंसचमीं की प्रवृति शैक्षणिक एवं धार्मिक कार्य कलापों में रहेगी तथा ठीनउपां पराक्रमी तथा साहसी कार्यो को सम्पन्न करेंगी फलतः कार्य क्षेत्र की सुदृढ़ता बनी रहेगी।

धन

झंसचमीं एवं ठीनउपां की तारा सम होने से आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा लेकिन झंसचमीं एवं ठीनउपां की जन्म राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में स्थित हैं। यह भकूट दोष के अंतर्गत माना जाता है। इससे इनकी आर्थिक स्थिति में अनावश्यक उतार चढ़ाव आएंगे। साथ ही मंगल का भी झंसचमीं की आर्थिक स्थिति पर दुष्प्रभाव रहेगा। इस प्रकार उपरोक्त प्रभावों से उनको आर्थिक क्षेत्र में यदा कदा

कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

भकूट दोष के प्रभाव से ठीनउपां की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्ययशील होगी तथा भौतिक साधनों पर इनका अधिक व्यय होगा। साथ ही झंसचमेंी भी जुए या अन्य व्यसनों में अधिक व्यय करने में तत्पर रहेंगे जिससे लाभ की अपेक्षा हानि की अधिक संभावनाएं होंगी। अतः यदि झंसचमेंी और ठीनउपां अपनी व्ययशील प्रवृति पर नियंत्रण रख सकें तो उनकी आर्थिक स्थिति सामान्य हो सकती है।

स्वास्थ्य

झंसचमेंी की नाड़ी आद्य तथा ठीनउपां की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से इनका स्वास्थ्य अच्छा ही रहेगा परन्तु मंगल का दोनों के ऊपर दुष्प्रभाव होगा जिससे दोनों धातु या गुप्त रोग संबंधी कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही झंसचमेंी हृदय रोग संबधी परेशनियों से युक्त रहेंगे जिससे शारीरिक क्षीणता रहेगी तथा ठीनउपां को गर्भपात की संभावना होगी। मंगल के प्रभाव से झंसचमेंी के पुरूषत्व में न्यूनता आएगी तथा ठीनउपां भी उदासीनता का भाव प्रदर्शित करेंगी फलतः उनके दाम्पत्य सुख में भी न्यूनता का आभास होगा। अतः उपरोक्त दुष्प्रभावों में कमी करने के लिए झंसचमेंी और ठीनउपां को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही मूंगा धारण करना दोनों के लिए श्रेयष्कर रहेगा।

संतान

संतति की दृष्टि से झंसचमेंी और ठीनउपां का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से झंसचमेंी और ठीनउपां को उचित समय पर संतति प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार से विलम्ब या व्यवधान नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उचित मात्रा में उनका पालन पोषण करने का अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त झंसचमेंी और ठीनउपां के पुत्र एवं कन्याओं की संख्या बराबर रहेगी।

ठीनउपां का प्रसव सामान्य रूप से होगा तथा इसमें उन्हें किसी भी प्रकार से परेशानी या कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही किसी प्रसूति संबधी चिकित्सा की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः ठीनउपां के मन में इसके प्रति जो अनावश्यक भय या चिन्ताएं रहती है उसको दूर कर देना चाहिए तथा नियमित रूप से गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण करवाने चाहिए। इस प्रकार ठीनउपां सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा स्वयं भी शांति तथा स्वस्थता की अनुभूति करेंगी।

बच्चों के द्वारा झंसचमेंी और ठीनउपां को पूर्ण सन्तुष्टि मिलेगी तथा अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं व्यवहार कुशलता से वे अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे यद्यपि माता पिता के वे आज्ञाकारी रहेंगे तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथापि माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार झंसचमेंी और ठीनउपां का पारिवारिक जीवन सुख तथा शांति से पूर्ण रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक वे अपना समय व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

ठीनउपां के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद ठीनउपां अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से ठीनउपां पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि ठीनउपां अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

झंसचमीं के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा झंसचमीं अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी झंसचमीं का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में झंसचमीं का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि झंसचमीं तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में झंसचमीं के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।